© 2018 IJSRST | Volume 4 | Issue 7 | Print ISSN: 2395-6011 | Online ISSN: 2395-602X
International Journal of Scientific Research in Science and Technology

विभिन्न संस्कृतियों में वैशाली की महिमा : एक अध्ययन

डॉ0 लखिन्द्र कुमार
एम.ए., पीएच.डी. (प्राकृत जैनशास्त्र)
बी.आर.ए. बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर (बिहार)

वैशाली स्वयं में एक संस्कृति प्रधान राज्य रहा है। यह विभिन्न संस्कृतियों का संगम रहा है। जहाँ प्राचीनतम काल से विदेह की संस्कृति– वैदेही संस्कृति का महत्व था। वहीं पूर्व काल से मैथिली– संस्कृत प्रभावित रही। समस्त तिरहुत क्षेत्र मिथिला का क्षेत्र रहा है और मिथिला की संस्कृति समस्त भारतीय संस्कृति में सर्वोत्तम है। बाद मागधी या मगध की संस्कृति में भी वैशाली की महत्ता की ज्योति जगमगा रही थी। फलतः मगध को अनेक बार वैशाली की ओर दौड़ना पड़ा। वैशालीय संस्कृति महत्ता तो तब समझ में आती है जब स्वंय महात्मा बुद्ध के वैशाली में विहार करना पड़ा था और बौद्ध संस्कृति यहाँ पर अपना जड़ जमा सकी। जहाँ तक जैन संस्कृति की बात है, तो चौबीसवें और अन्तिम तीर्थकार को स्वंय इस पवित्र धराधाम पर आर्विभाव के लिए वैशाली का ही चमन करना पड़ा। इस प्रकार हम देखते हैं कि वैदिक काल से लेकर ब्राह्मण, आरण्यक, उपनिषद् कालीन संस्कृति वैशाली की महिमा से परिचित रही है। स्वंय राम को इस धरा– धाम पर पधारना पड़ा। अयोध्याधिपति महाराज दशरथ जब यहाँ पर अपने पुत्रों की बारात लेकर आते हैं तो यहाँ के लोगों के प्रेम और त्याग की पौराणिक काल में भी वैशाली की महिमा प्रशंसनीय रही है। फलतः महावीर को अपने जन्म कल्याणक के लिए गणतंत्र की जननी वैशाली का ही चयन करना पड़ा। वैशाली की महिमा के लिए सबसे बड़ी किसी संस्कृति की चर्चा अत्यावश्यक ही नहीं बल्कि अनिवार्य है तो वह है लोक संस्कृति। यहाँ पर दुनिया की राजतंत्रीय–संस्कृति के प्रतिकूल गणतंत्रीय संस्कृति का महत्वपूर्ण

स्थान है। उस समय लिच्छिवियों के द्वारा लोकतंत्रात्मक शासन प्रणाली का संचालन ईश्वर के द्वारा नहीं बल्कि मनुष्य के द्वारा किया जाता था। वैशाली में गणतंत्रीय शासन–प्रणाली अथवा लोक संस्कृति के मानव– शासकों में सिद्धार्थ भी एक थे, जिनकी ज्येष्ठा महारानी त्रिशाला जो विदेह की संस्कृति का प्रतीक थीं से महावीर का जन्म हुआ। वह वैशाली तत्कालीन राज्यों में अत्यन्त समृद्ध, सुव्यवस्थित और प्रतिष्ठित गणराज्य था। वहाँ के शासक लिच्छवीं थे, जिनमें चेटक प्रभावशाली राज्य थे। इनका सम्बन्ध तत्कालीन विभिन्न राज्यों के राजाओं से था। त्रिशला इन्हीं चेटक की पुत्री थी जिनका विवाह वैशालीय कुण्डपुर के राजा ज्ञातृवंशीय सिद्धार्थ के साथ सम्पन्न हुआ था। वह वैशाली की ही महिमा थी कि चेटक को सिद्धार्थ के साथ त्रिशाला का विवाह करना पड़ा। दो संस्कृतियों का मेल हुआ। इसी चेटक की पुत्री बेलना का विवाह मगध सम्राट, श्रेणिक बिम्बसार के साथ हुआ। इसमें मगध की मागधी संस्कृति का संगम वैशालीय विदेह संस्कृति के साथ हुआ। विदेह की विशिष्ट एवं प्रिय संस्कृति के कारण ही त्रिशला का अपर नाम प्रियकारिणी था, क्योंकि वे सबके साथ प्रेम–पूर्ण व्यवहार करती थी। साथ ही राजा सिद्धार्थ को अतिसिय प्रिय लगती थीं। उनका एक और नाम जो वैदेही संस्कृति कार्यारिचायक है, 'विदेह विष्णा' था।

कर्मकाण्ड के अंतर्गत आज भी जम्बूद्वीप की उच्चारण बड़े ही श्रद्धा के साथ किया जाता है। जैन ग्रन्थों में तो इसकी प्रसिद्ध है ही। जैनेतर ग्रन्थों, पुराणों में भी इसकी प्रसिद्धि आज भी इसी जम्बूद्वीप के भारत क्षेत्र से सम्बद्ध एक नगरी है, जिसका नाम 'वैशाली' है। यह धन–जन से परिपूर्ण और वैशाली गणतंत्रात्मक–शासन व्यवस्था का केन्द्रभूत थी। इस गणतंत्रात्मक शासन के नायक महाराज चेटक थे। चेटक श्रावक थे। अतएव वैशाली में श्रावक– संस्कृति युगों से चली आ रही थी। फलतः चेटक ने श्रभण संस्कृति को अपनाया था। महाराज सिद्धार्थ भी श्रावक धर्म के अनुयायी थे। इन दोनों ही राजाओं के राज्यों में सर्वभाँति समृद्धि का दत्तचित होकर एवं निपुणतापूर्वक प्रयत्न किया जा रहा था। अतएव दोनों के राज्य समृद्ध, सुसम्पन्न, सुशान्ति, सुव्यवस्थित एवं सुखी थे। इनके राज्यों की जनता सुखी थी। कारण कि इन दोनों राजाओं की राज्य–प्रणाली सर्वतंत्र, स्वतंत्र–गणतंत्र का अनुसरण करनेवाली थी। वहाँ साम्राज्यवाद एवं

सामान्तशाही को कोई प्रश्रय नहीं था। वैशाली गणतंत्र में शासकों की सभाओं को 'गणसनिपात' नाम दिया गया है। मतदान के लिए भी उस समय सभा का आयोजन घोषणापूर्वक किया जाता था और गुप्तविधि से श्लाकाओं द्वारा अपन 'छन्द' (मतदान) किया जाता था। राज्यसभा में शास्त्र–विहित अंगों का भी पूर्ण समावेश था। किसी विवादग्रस्त विशद विषय के समाधान के लिए सार्वजनिक सभाओं की व्यवस्था भी की जाती थी। राज्य में श्रमण–श्रामणी और श्रावक, श्राविकाओं तथा धर्मात्माओं को पूर्ण सम्मान प्राप्त था। कुण्डलपुर और उसके निकटवर्ती तपोवन की भूमि धन्य है जहाँ तीर्थकार के चरण पड़े और चरण रज से यहाँ की भूमि पवित्र हुई। मार्गशीर्ष–कृष्णा दशमी का दिन भी बड़ा पवित्र है जिस दिन तीर्थकार (कुमार) की दीक्षा हुई। वर्णाश्रम धर्म संस्थाओं में वैशाली की महिमा अक्षुण्ण बनी रही। बौद्ध–संस्कृति में भी वैशाली की महिमा गौरन्वित हुई। यही कारण है कि आज भी विश्व के कोने–कोने से धर्मानुरागी एवं वैशाली के प्रेमी जन इस पवित्र धराधाम की धूलि का शिर से स्पर्श प्रणाम करने के लिए आते रहते हैं और जो नहीं आ पाते हैं वे इसके लिए लालायित रहते हैं, जब भी मौका मिलता है यहाँ पधारते हैं। वे कहते हैं कि धन्य हो धरती जहाँ हमारे भगवान का प्रादुर्भाव हुआ था। वह धरा धाम धन्य है जहाँ पर हमारे भगवान ने कर्मभूमि बनायी थी। वे अनेकश इसे प्रणाम करते है।

वैशाली का भूमि आज भी महिमा मण्डित है। यहाँ के निवासी शान्तिप्रिय, आतिशाप्रेमी, प्रेम–दानी रहे हैं। ये लोग धर्म परायण, दयालू एवं कर्त्तव्यनिष्ठ, कर्मठ व्यक्तित्व के है। यहाँ के वासी कर्म के धनी हैं। यहाँ आज भी अंगराइयों की सघनता एवं छाया, हरियाली, फलों का मिठास, पुष्प वाटिकाओं की सुन्दरता किसका मन मुग्ध नहीं कर लेती। यहाँ के कुँओं या नलकूपों के जल में आज भी मिठास है। यहाँ मिठास है वाणी में, फल में, फूलों–अन्न में, जल में, थल में, नभ में सर्वत्र माधुर्य– माधुर्य ही माधुर्य है। लोक अतिथियों का बड़े ही श्रद्धा के साथ स्वागत करते हैं। यहाँ के वासी अतिथि प्रिय है। यही कारण है कि भगवान बुद्ध एवं महावीर को अनेक बार यहाँ आना पड़ा। यहाँ की स्त्रियाँ नृत्यकला, गीत, संगीत वाध्य में अत्यन्त निपुण है। अतिथियों को पुष्पहारों से अलंकृत किया जाता है। फूलों की माला से लाद दिया जाता है, अतिथियों को

जो यहां आ जाता है जाने का नाम नहीं लेता है। मधुर–मधुर प्रिय वार्ता को सुनकर किसका मन मुग्ध नहीं होगा। यहाँ के वासी, मुख्यालय से वैशाली ग्राम के एवं जिला के निवासी बज्जिका भाषा में जब बात करते हैं और एक दिन और ठहरने के लिए आग्रह करते हैं तो सबका मन रूद्र हो जाता है।

वैशाली में शादी

विवाह के अवसरों पर भोज की व्यवस्था, भोजन सामग्रियों एवं भोजन के प्रकारों को देख जिह्वा लपलपा जाती है। शादी–विवाह के अवसर पर यहाँ आज भी मण्डपों की, पण्डालों की झार–गेटों, तोरण द्वारा, वन्दन वारों से गाँव–नगरों को पाट दिया जाता है। ऐसे विशेष अवसरों पर यहाँ की संस्कृति को देखकर बरबस हमारा ध्यान रामायण कालीन संस्कृति की ओर चला जाता है। रामायण में बाल्मीकि ने राम के विषय में लिखा है कि जब राम गंगा के उस पार से वैशाली के विशाल–ऊँची अट्टालिकाओं को देखकर विस्मित हो जाते है। बरबस वे गुरूदेव विश्वामित्र मुनि के चरणों में नमस्कार कर पूछ बैठते हैं कि गुरूवरा वह कौन सी नगरी है? वहाँ कि अट्टलिकायें ऊँची–ऊँची है। उनके परकोटे भी ऊँची और विशाल है। उन पर अनेक रंग ध्वजा–पाताकाएँ फहरा रही है। वहाँ इस समय कौन राजा राज्य कर रहा है। किसने इस नगरी का निर्माण एवं विस्तार किया है। राम के इन विनम्र प्रश्नों का उत्तर गुरूवर विश्वामित्र ने बड़े ही मृदु भाषा के सरल एवं सहज भाव से देते हुए कहा। प्राचीन काल में सूर्य वंश में उत्पन्न इक्ष्वाकुवंशीय राजा विशाल ने इस महान् नगर की स्थापना की है। उन्ही के वंश को राजाओं का यहाँ आज भी शासन चल रहा है। वह जो अंगराई है वह यहाँ की संस्कृति की परिचायिका है। यहाँ के वासी अतिथि प्रिय है।

कौशल जनपद में अत्यन्त प्राचीनतम काल से इक्ष्वाकु वंश का शासन चल रहा था और यहीं से इस वंश की शाखाएँ वैशाली और मिथिला में जब गणतंत्रों की स्थापना हुई, तब इस वंश के लोगों के रूप में कई राज्यों में पहुँच चुकी थी। वैशाली कि लिच्छवि, कुशीनगर के मल्ल, चिप्पलीवन के मोरीय, कपिलवस्तु के शाक्य और रामगाँव के कोलिय इक्ष्वाकुवंशी थे। सभी गणतंत्रात्मक राज्यों में वृज्जिसंघ सबसे अधिक बलशाली और प्रतिष्ठित था। इसका अपर नाम बज्जिसंघ

भी है। ज्ञातृक, क्षत्रिक कश्यप बोबज थे और इनकी राजधानी कुण्डपुर या कुण्डग्राम में थी। इसका दूसरा नाम क्षत्रिय कुण्ड भी था। मूलतः यह वैशाली नगर का उपनगर था। उम्रवंशी लोगों का संबंध वैशाली एवं हस्तिग्राम से था।

वैशाली नगरी की शिल्प कला व्यवस्था एवं गृह निर्माण व्यवस्था, साथ ही नगर का निर्माण की व्यवस्था भी अद्भूत थी। यह नगर चहारदिवारियों से घिरा हुआ था। इसमें तीन प्रकार की दिवालें थी और प्रत्येक दिवाल एक दूसरे से एक गव्यूति दूर पर स्थित था। तीनों स्थानों पर द्वार थे जो गोपुरों एवं अट्टालिकाओं से मुक्त थे। वैशाली के तीन खण्ड थे। प्रथम खण्ड में स्वर्ण निर्मित गोपुरों से युक्त सात हजार भवन, मध्य भाग में चाँदी के गोपुरों से निर्मित चौदह हजार भवन और तृतीय एवं अन्तिम भवन भाग में ताम्र के निर्मित गोपुरों से युक्त इक्कीस हजार भवन थे। इनमें उच्च, मध्यम और निम्नवर्गों के लोग अपने–अपने पदों के अनुसार निवास करते थे। वैशाली के निवासियों ने यह नियम बना रखा था कि प्रथम भाग में जन्मी कन्या का विवाह प्रथम भाग में ही होगा, द्वितीय भाग में या तृतीय भाग में नहीं। मध्य भाग में जन्मी कन्या का विवाह प्रथम और द्वितीय भागों में होगा और अन्तिम भाग में जन्मी कन्या का विवाह तीनों में से किसी भी भाग से किया जा सकता था। वैशाली का यह संविधान था कि वैशाली में जन्मी कन्या का विवाह किसी दूसरे नगर या राज्य में नही किया जा सकता है। इस प्रकार वैशाली की जातियाँ तीन वर्गों में विभक्त थीं और तीनों का विवाह–व्यवस्था उपर्युक्त क्रम से चलती थी। यह उस काल की संस्कृति का एक अद्भूत उदाहरण है।

उपर्युक्त वर्णनों से ऐसा प्रतीत होता है कि वैशाली में अनेक संस्कृतियों का सम्मिश्रण था, संयोग था, समन्वय था जो अनेक लोगों को यहाँ आने के लिए वशीभूत किया करते थे। धन्य है, वैशाली का वह विरासत जो आज भी लेखक को कुछ लिखने के लिए विवश कर देता है। वैशाली वस्तुतः वैशाली है। यह विशाल प्राचीनतम धरोहर है। इसकी महिमा वर्णनातीत है। सभी संस्कृतियों में वैशाली की संस्कृति अनुपम है। यह उनकी संस्कृतियों को धारण किये हुए है। अतएव विभिन्न संस्कृतियों में इसकी महिमा स्वतः स्पष्ट हो जाती है।

संदर्भ सूचीः

1. चतुर्थ वैशाली महोत्सव–राहुल सांकृत्यान का भाषण।
2. दीर्घनिकाय (महापरिनिब्बाणसूत्र), अट्टकथा।
3. रामायण, बालकाण्ड, सर्ग 46, श्लोक 11–12.
4. भगवान महावीर : बाबू कामता प्रसाद।
5. वैशाली अभिनन्दन ग्रंथ, पृष्ठ 44–45.
6. आदिपुराण 1187.
7. हरिवंशपुराण, ज्ञानपीठ संस्करण 60/551.